ISSN 2349-638x

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-XII DEC. 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण व्यवस्थापन

प्रा. डॉ. माणिक अनंतराव विजापुरे
एम्.ए., एम्.एड्., एम्.फिल्., पीएच्.डी.
असोसिएट प्रोफेसर
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर

प्रस्तावना :

प्राकृतिक संसाधन दो भागों में बाँटे जा सकते है । पुनः पोषित होनेवाले तथा पुनः पोषित न होनेवाले । पहली प्रकार के स्त्रोत वे है जो प्राकृतिक क्रिया से अपने आप प्राप्त हो जाते है, जैसे भूमी, जल, पौधे और जानवर । दुसरे प्रकार के संसाधन वे है जो उपयोग से समाप्त हो जाते है, जैसे कोयला, तेल, विभिन्न प्रकार की धातुएँ ।

हमारा उद्देश होना चाहिए कि हम ऐसे पर्यावरण का निर्माण करे, जो हमारे जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ती भी करें, एक रहने लायक स्वच्छ–सुंदर स्थान का निर्माण भी करें । इसलिए पर्यावरण का विवेकपूर्ण उपयोग इसपर निर्भर होता है कि मानव के भविष्य की आवश्यकताओं को समझा जाए। इसके लिए हमे उन प्राकृतिक नियमोंपर विचार करना होगा, जो धरतीपर मानव के अस्तित्व के नियंत्रण के लिए पुरातन काल से बने है । समय–समयपर ऐसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बंद कर दिया जाना चाहिए जो कम है और जिनका संरक्षण मानव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है ।

वास्तव में पर्यावरण के प्रति अज्ञान से ही मनुष्य का बहुत बडा नुकसान हो रहा है । बिना सोचे–समझे प्राकृतिक संसाधनों का शोषण ही अंततः मनुष्य को सचेत करने लगा है कि ये संसाधन शीघ्र ही समाप्तप्राय होते जा रहे है । यह पृथ्वी एक पूर्ण व्यवस्था है और नष्ट होने के साथ ही साथ यहाँ पुनः पोषित होने का चक्र सदैव चलता रहता है । परन्तु मानव को यह देखना है कि सिर्फ संसाधनों को पुनः पोषित भी करना आवश्यक है । संसाधनों के उत्पादन में अव्यवस्था पैदा न हो जाए इस पर ध्यान देना चाहिए । जल, वायू प्रदूषित होने से पर्यावरण संतुलन बिगड सकता है । पर्यावरणीय दृष्टीसे सर्वत्र चिंता का अनुभव हो रहा है । केवल जागरूक और जानकार नागरिक ही अपने पर्यावरण का उचित प्रबंधन कर सकता है ।

अतीत में भारत की पर्यावरण–नीति :

प्राचीन इतिहास में मानव का प्रमुख ध्येय प्राकृतिक व्यवस्था के साथ तारतम्य रखना था। धर्मशास्त्रों एवं उपनिषदों के नियम इस तारतम्य की इच्छा–आवश्यकता को प्रदर्शित करते है । प्राचीन भारत मे मनुष्य अपने अस्तित्व की संपूर्णता से जुडा हुआ था। वह अपनी स्वतंत्रता और सुख के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अंतरात्मा से जुडा था।

भारत में पर्यावरण–शिक्षा के उद्देश्य :

आधुनिक भारत में पर्यावरणीय शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश निर्धारित किए जा सकते है –

1. उत्तम नागरिकता का विकास :

उत्तम नागरिक बनना सामाजिक अध्ययन के माध्यम से ही संभव है, अतः यही इसका प्रमुख लक्ष्य माना गया है ।

2. सामाजिक भावनाओं का विकास :

पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या का निराकरण छात्रों एवं जनता के मिले जुले प्रयासों से ही किया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से सच्ची सामाजिक भावनाओं का विकास होता है, अतः यह दुसरा लक्ष्य है ।

3. जल–प्रदूषण की समस्यायों से अवगत कराना :

छात्रों को जल–प्रदूषण की समस्याओं से अवगत कराना चाहिए तथा इसके उपचार बनाने चाहिए, तभी सभी व्यक्ती और छात्र मिल–जुलकर इस समस्या का निराकरण कर सकेंगे ।

4. वायु–प्रदूषण की समस्याओं से अवगत कराना :

ताकि छात्र वायु को प्रदूषित होने से रोकने में अपना सक्रिय योगदान कर सके और असके आगामी खतरों से सचेत रहे ।

5. ध्वनि–प्रदूषण की समस्याओं से अवगत कराना :

छात्रों को तेज ध्वनिवाले वाहनों, रेडिओ, टेप, स्टिरिओ आदि से होनेवाले ध्वनि–प्रदूषण से अवगत कराना, ताकि छात्र अपने आसपास के वातावरण में ध्वनि प्रदूषण से होने से रोके ।

6. भू–प्रदूषण की समस्या से अवगत कराना ।

7. पर्यावरण–संरक्षण हेतु प्रेरित करना ।

वर्तमान में भारत की पर्यावरण निती :

आधुनिक संदर्भ में प्रिसटन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रिचर्ड फॉक सुझाव देते है – ''एक इस प्रकार की नई व्यवस्था के आविष्कार की आवश्यकता है, जिसमें व्यापक स्तर पर यह सहमती हो कि सभी मनुष्य एक मानव समाज के सदस्य है।'' आज सारी दुनिया में चेतना पैदा हो रही है, क्योंकि, पर्यावरण प्रदूषण के संभावित गंभीर परिणामों ने भयावह स्थिती पैदा कर दी है। 'पर्यावरण सुरक्षित' रखने का नारा सदैव ध्यान में आता है ।

वैकल्पिक उर्जा के रूप में भी भारत में सौर–उर्जा, निर्धुम चुल्हे तथा बायो–गॅस की तकनीक का विकास हो रहा है ।

भविष्य में पर्यावरण व्यवस्था :

भविष्य में पर्यावरण–व्यवस्था की नीति के निम्न उद्देश्य होने चाहिए –

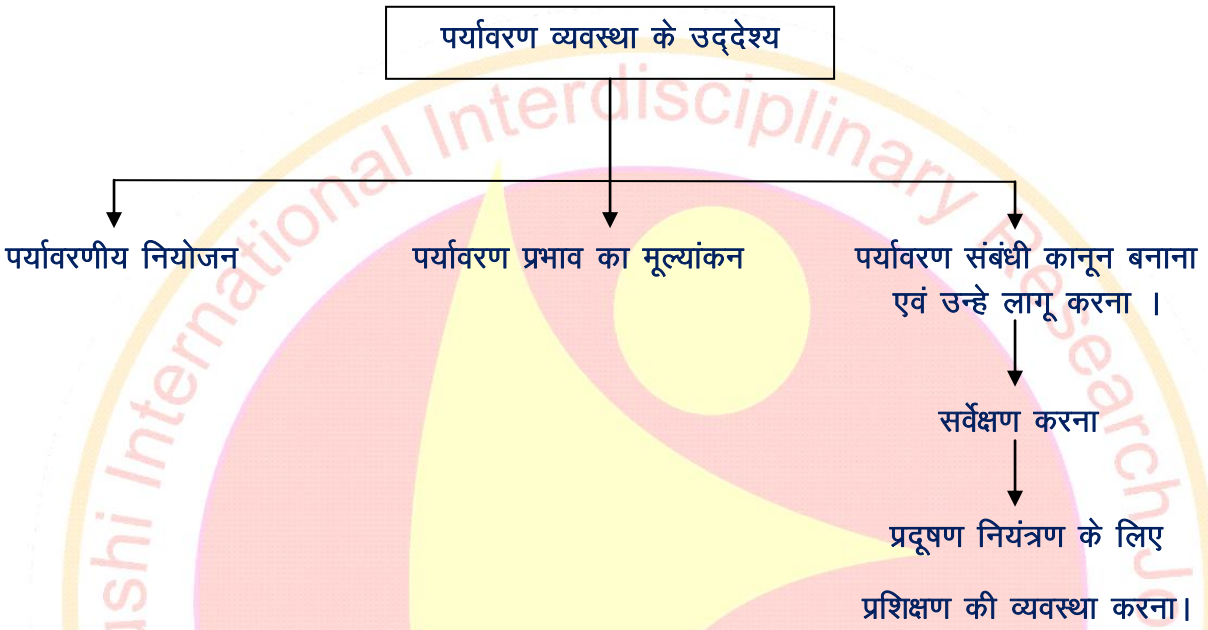

हमें संपूर्ण पृथ्वी के बारे में सोचना होगा, परंतु कार्य स्थानीय आधार पर ही करना होगा। पर्यावरणीय संरक्षण भविष्य के लिए एक प्राथमिक आवश्यकता है क्योंकि इसमे मानव जाति की उन्नति एवं प्रगती निहित है ।

पर्यावरण को हम चार मुख्य भागों मे वर्गीकृत कर सकते है –

भौतिक	जैविक	मानवीय उपयोग	मानवीय मूल्य
जल वायु पृथ्वी	जलिय एवं स्थलिय पेड–पौधे	खेतीबाडी, कारखाने, जंगल, परिवहन, जलमार्ग पर चलनेवाले स्वचलित वाहन जल–उर्जा और	परंपरागत जीवनशैली, धार्मिक–स्तर स्थापत्य–भाग जनसंख्या जनस्वास्थ्य,

पृथ्वी के संसाधनों के लगातार ऱ्हास से हम बहुतसी हानियों बर्दाश्त कर रहे है जो हमारी प्रकृति के लिए खतरा है । पिछले दशकों मे विभिन्न कारणों से हुई जंगलों की कटाई ने पहाडियों की हरियाली को छीन लिया है । उधर रेगिस्तानी क्षेत्र में तेज हवाओं से रेगिस्तान मे एक स्थान से दुसरे स्थान की ओर परिवर्तित होने के फलस्वरूप परिवहन–व्यवस्था गंभीर रूप से प्रभावित हुई है । खनिज पदार्थों को प्राप्त करने के उद्देश से की गई खुदाई से पृथ्वी में बहुत–से ऐसे स्थान बन गए है जो पर्यावरण को बिगाडने में सहायता करते है। सिमेंट फॅक्टरी के लिए चुना–पत्थर निकाला जाता है । पर्यावरण की सुरक्षा सामाजिक उत्तरदायित्व है ।

पर्यावरण व्यवस्थापक के निम्न उत्तरदायित्व होने चाहिए –

1. पर्यावरण का हित दृष्टी में रखते हुए प्रायोजनाओं का निर्माण करना ।
2. सभी क्षेत्रों मे पर्यावरण के उन्नयन हेतु योजनाबध्द कार्य करना ।
3. पर्यावरण के संबंध मे संचालित सभी क्रियाओं की गुणवत्ता का समय–समय पर मूल्यांकन करना तथा भौतिक पर्यावरण के संरक्षण के बारे में ध्यान आकर्षित करते रहना ।
4. भौतिक संरक्षण के संबंध मे उपक्रम आयोजित करते समय मानवीय शक्ति एवं विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का सऱ्हदय सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना ।
5. पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने की समुचित व्यवस्था करना ।
6. सरकार एवं अन्य स्वयंसेवी संस्थाओद्वारा पर्यावरण व भौतिक साधनों के संरक्षण के संबंध मे प्रभावकारी भूमिका अदा करना ।

निष्कर्ष :

1. निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि पर्यावरण–नीति तैयार की जानी चाहिए।
2. भारत के लिए एक पर्यावरण–नीति राष्ट्रीय तथा वैश्विक एकता पर आधारित होनी चाहिए ।
3. यह सभी का कर्तव्य है कि प्रकृति के पर्यावरण–संतुलन को बनाए रखा जाए ।

शिफारस :

1. पर्यावरण को संतुलित करने के लिए प्रकृति के साथ मनुष्य का मित्रवत व्यवहार होना चाहिए।
2. पर्यावरण का ऐसा प्रबंधन किया जाना चाहिए, जिससे आनेवाली पिढियाँ भी इसका उपयोग कर सके।
3. ऐसे केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए, जिनमे नगरो और बस्तियों के पास ही पर्यावरण की शिक्षा प्राकृतिक स्थितियों में ही दी जानी चाहिए ।
4. नेचर क्लब, नेचर कॅंप की स्थापना की जानी चाहिए ताकि ये आवश्यक जानकारीयाँ प्रदान कर सके। प्रकृति के संबंध मे जो अनुभव है उन्हे बाँटना चाहिए ।